“शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में संवेदना के विविध रूप”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
के मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच. डी. (हिंदी)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध – प्रबंध

शोध - कर्ता

विक्रम अशोक पांडे

(एम.ए.,बी.एड्., नेट.)

शोध-निर्देशक

प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी

(एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.)

शोध-निर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय, लातुर
जि. लातुर

जुलाई - 2022

शिवमूर्ति के कथा - साहित्य में संवेदना के विविध रूप

पृष्ठभुमि

आधुनिक भारतीय साहित्य में कहानी और उपन्यास विधाएँ प्रमुख मानी जाती है। आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास लगभग नौवीं शती से क्यों न हो लेकिन तत्कालीन समाज में राजा- महाराजाओं के प्रति प्रशंसात्मक पद्य लेखन लिखा जा रहा था। यह पद्य प्रशास्तिपत्रों तक सीमित होने पर उसमें उतना विकास नहीं हो पाया लेकिन कुछ समय के बाद भारतीय साहित्यकारों एवं व्यक्तियों का संबंध विदेशी भाषा में लिखे साहित्य से आया, उससे प्रभावित होकर हिंदी साहित्य की हर एक विधा में गति आती गयी तब कहीं जाकर १९ वी. शती से गद्य लेखन का आरंभ हो पाया। उनमें उपन्यास कहानियाँ अन्य विधाओं की तुलना में विकास के चरमसीमा पर निरंतर रही।

स्वातंत्र्योत्तर काल के पश्चात ये दोनों विधाएँ देशी विदेशी साहित्य के प्रभाव और प्रेरणा से प्रेरित होकर और भी पल्लवीत हो गयी। तत्कालीन हिंदी साहित्यकारों ने उन्हें अलग-अलग रूपों के आधार पर प्रस्तुत किया है। परिणामतः हिंदी भाषा में लिखे गये साहित्य में और भी निखार आता गया। समकालीन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में व्यक्ति जीवन, समाज जीवन, नारी जीवन और उनकी भावनाओं को तथा उनकी समस्त जटिलताओं को, सरलता, स्वच्छ जीवन, जन-मानस की भावनाओं को, उनकी संवेदनाओं को कथा-साहित्य में प्रस्तुत कर उनमें चेतना निर्माण करने का कार्य किया है। समकालीन साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के आधार से समाज के सभी पहलुओं का यथायोग्य एवं यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया है । जिनमें साहित्यकार शिवमूर्ति जी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में तत्कालीन समाज का यथायोग्य चित्रण कर बडी सजगता के साथ मानव जीवन की पीडा, ग्रामीण समाज का वास्तव, नारी जीवन का यथार्थ चित्रण, मानव मन की वेदना, घुटन, जीवन की त्रासदी, नारी शोषण तथा धार्मिकता के आधार पर मनुष्य जीवन में निर्माण होनेवाली समस्याओं को

अभिव्यक्त कर शोषित पीडित नर-नारी की संवेदनाओं के विविध रूपों को बडी सशक्तता के साथ तथा यथार्थता के आधार पर प्रस्तुत किया।

सृजनकर्ता रचना के माध्यम से जीवन-विकास की जटिलताओं, मानव जीवन की चेतना, मानव की मानसिकता, समाज व्यवस्था का चित्रण निर्माण करके कथा साहित्य को गति प्रदान करता है। साथ ही कहा जाएगा कि मानव जीवन के कल्याणकारी तत्वों के साथ सूक्ष्म भावनाओं का भी उत्कर्ष करते हैं। समाज के विभिन्न प्रश्नों को सुलझाने के लिए और उनमें नई चेतना जागृत करने के लिए शिवमूर्ति जी के विचारों को समाज तक पहुँचाना आवश्यक है।

इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर मैंने 'शिवमूर्ति के कथा साहित्य में संवेदना के विविध रूप' इस विषय पर विश्वविद्यालय की पीएच.डी उपाधि हेतु शोध कार्य करने का विचार किया है।

शोध प्रेरणा एवं चयन

साहित्य का अध्ययन करने पर यह बात समझ में आती है आजकल भोगे हुए स्थितियों की वास्तविकता का चित्रण पाठकों को रूचिकर लगती है। कल्पना के धरातल की उँची उडान में उडने से वास्तविकता की कसौटी में जीना यही सत्य और सही लगने लगता है। मेरी रूची पहले से ही कथा साहित्य के प्रति रही है। बचपन से ही मनोरंजनात्मक कथाओं को पढने का मानो चस्का ही लगा जैसे -जैसे मेरी शिक्षा आगे बढते जा रही थी वैसे-वैसे मैं कथा साहित्य की ओर आकृष्ट होता गया। तभी प्रसिद्ध साहित्यकार शिवमूर्ति जी का साहित्य पढने में आया। जिनमें १) कसाईबाडा २) भरतनाट्‌यम् ३) तिरिया चरित्तर ४) सिरी उपमा जोग ५) ख्वाजा ओ मेरे पीर आदि कहानियाँ तथा त्रिशूल, दर्पण, आखरी छलाँग (उपन्यास) आदियों का अध्ययन करने पर पता चला कि भारतीय समाज में व्यक्तियों का जीवन किस प्रकार का रहा है? उन्हें किन-किन समस्याओं से जुझना पडा है। तथा समाज में प्रचलित कुरीतियों के कारण मनुष्यों का जीवन किस प्रकार परिवर्तित हो रहा था। शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में व्यक्त विविध रूपों के माध्यम से संवेदनाओं के विविध रूपों को जानने की इच्छा निर्माण हुई। मेरे

आदरणीय, श्रद्धेय गुरुवर्य, सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय, लातुर के हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रा. डॉ. संतोष कुलकर्णी सर जी की प्रेरणा से 'सारिका', 'हंस', 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'युगवाणी', 'प्रकाशन समाचार', 'वागर्थ', 'आलोचना' आदि पत्रिकाओं को पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तभी मेरे मन में शिवमूर्ति के साहित्य में व्यक्त संवेदनाओं के विविध रूपों को जानने की भावना निर्माण हुई। अतः मैने एक बात ठान ली , यदि भविष्य में शोध कार्य करने का सुअवसर मिलता है तो प्रसिद्ध साहित्यकार शिवमूर्ति के साहित्य पर ही करूँगा। इस विषय को लेकर जब मैं आदरणीय गुरूवर्य प्रा. डॉ. संतोष कुलकर्णी सर जी के यहाँ पहुँचकर शिवमूर्ति के साहित्य पर गहन विचार-विमर्श करने के पश्चात सर जी के सम्मुख पीएच.डी शोध कार्य हेतु विषय रखा। तभी 'शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में संवेदना के विभिन्न रूप' नामक शीर्षक निश्चित किया। प्रस्तुत विषय मार्गदर्शक, गुरूवर्य जी ने मेरी जिज्ञासा को देखकर इस शीर्षक से शोध कार्य को अनुमति देते हुए पीठ पर आर्शिवचन का हाथ रखते हुए भावी कार्य के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। परिणामतः मेरी जिज्ञासा एक साद रूप में पूर्ण होने जा रही है।

शोध का उद्देश्य

१) समकालीन साहित्यकार शिवमूर्ति के विविध पहलुओं को रेखांकित करना।

२) शिवमूर्ति के समग्र साहित्य का परिचय देना।

३) उपन्यास साहित्य का मूल्यांकन करना।

४) मजदूर, प्रताडित,पीडित और नारी शोषण पर प्रकाश डालना।

५) शिवमूर्ति के साहित्य का हिंदी साहित्य में योगदान।

६) शिवमूर्ति के उपन्यास एवं कहानी साहित्य में अभिव्यक्त धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक, पारिवारिक स्थितियों को,जनमानस की संवेदना के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

७) शिवमूर्ति के साहित्य का आज के परिप्रेक्ष्य में योगदान एवं महत्व।

८) समाज में हो रहे अन्याय, अत्याचार, शोषण एवं दमित वासनाओं को शिवमूर्ति जी के कथा साहित्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को पाठकों

के समक्ष रखना।

शोध विषय की प्रासंगिकता

समकालीन साहित्य के माध्यम से समाज का यथार्य चित्रण दिखाई देता है। इस साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण दिखाई देता है। सुशिक्षित बेरोजगारी, स्त्री आकर्षण, राजनेताओं के दोहरे आचरण तथा मानदण्डों का वर्णन, जातियता घिनौना रुप यह शिवमूर्ति जी के कथा साहित्य की विशेषता रही है।

कहानी एवं उपन्यासों में जातिय भावना, स्त्री-पुरूष संबंध, प्रेम,वासना,सौंदर्य, पुत्र प्राप्ति का मोह, विवाह भंग, बंटवारा, क्रूरता, बदले की भावना, नारी विषयक दृष्टिकोन आदि का विवेचन और समस्याओं का बहुत ही सूक्ष्मता और सजीवता से वर्णन किया है। इसीलिए शिवमूर्ति जी के उपन्यास तथा कहानियों मे वर्णित समस्याओं एवं संवेदना को उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। यही विषय की प्रासंगिकता हो सकती है।

भारत में किसानों की अवस्था दिन-ब-दिन बदहाल बन रही है कभी प्राकृतिक आपदा तो कभी राजनैतिक असमर्थताओं के कारण वह आज हाशिए पर है। खेती में काम के लिए मजदूरी बढ गयी है। खाद, बींज एवं दवाईयों के भाव बढ गए है। इसके चलते खेती में जितना डाला हुआ है उससे उत्पाद में कमी आने लगी है। सरकार की नीतियाँ किसानों के विरोध मे है। महंगाई बढती हैं तो सरकार किसानों के ही मालो को भाव कम करती है। इसलिए आज किसानों की हानि हो रही है। भारतभर में किसान आत्महत्या करने लगे है। यह प्रश्न बडा गंभीर रूप ले रहा है। शिवमूर्ति ने अपने आखरी छलाँग उपन्यास में चित्रित करते है। परिणामतः आज समाज से जन आंदोलन उभरकर आने लगे है।

प्रथम अध्याय

संवेदना ; अवधारणा, स्वरूप और लक्षण

द्वितीय अध्याय

कथाकार शिवमूर्ति जीवन और अभिव्यक्ति

तृतीय अध्याय

शिवमूर्ति के उपन्यास-साहित्य में संवेदना के विभिन्न रूप

चतुर्थ अध्याय

शिवमूर्ति की कहानियों में संवेदना के विभिन्न रूप

पंचम अध्याय

शिवमूर्ति के उपन्यास तथा कहानियों का शिल्प की दृष्टि से अध्ययन

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

प्रस्तुत शोध शीर्षक को उपर्युक्त अध्यायों में विभक्त किया है, उसमें यथावश्यक परिवर्तन संभव है, फिर भी इस शोध का संक्षिप्त व्यौरा निम्न है-

शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में संवेदना के विविध रूप

प्रथम अध्याय

प्रस्तुत अध्याय में संवेदना की अवधारण, स्वरूप और लक्षण का समावेश होगा जिनमें विभिन्न विचारक विद्‌वानों द्वारा संवेदनाओं की परिभाषाओं को समाहत किया जाएगा। शोध विषय कों निम्नांकित रुप में प्रस्तुत किया जाएगा।

१.१ संवेदना : अर्थ

१.१.१ शब्दगत : अर्थ

१.१.२ कोषगत : अर्थ

१.२ संवेदना : अवधारणा

१.३ संवेदना : स्वरूप

१.४ संवेदना : लक्षण

इस प्रकार प्रथम अध्याय का संक्षिप्त प्रारूप होगा।

द्वितीय अध्याय

प्रस्तुत अध्याय में कथाकार शिवमूर्ति ने अपने साहित्य में समाज के सभी पहलुओं का चित्रण किया है। सुशिक्षित बेरोजगारी, अकाल, भूखमरी, अनमेल विवाह, नारी अत्याचार, वासना, जातिगत भेद, प्रेम एवं प्रेम से उत्पन्न पीडाएं,

ग्रामीण भाग (देहातो) का वर्णन बेकारी की वजह से खुद की पत्नी भी पति का साथ न देते हुए गैर मर्द को साथ देती है। निजी जीवन को जनमानस की पीडा मानकर जीवन जीनेवाले और उनकी संवेदनाओं को वाणी देनेवाले हिंदी साहित्यकार शिवमूर्ति जी के जीवन अभिव्यक्ति को शोध कार्य की दृष्टि से निम्नांकित रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।

२.१ जीवन और अभिव्यक्ति

२.१.१ शिवमूर्ति : जीवन परिचय

२.१.२ जन्म

२.१.३ बचपन एवं बाल्यकाल

२.१.४ पारिवारीक जीवन

२.१.५ भाई बहन

२.१.६ विवाह

२.१.७ संतान

२.१.८ शिक्षा संस्कार

२.१.९ व्यवसाय एवं सम्प्रति

२.१.१० पुरस्कार

२.२ शिवमूर्ति : चरित्रगत विशेषताएं

२.३ शिवमूर्ति : अभिव्यक्ति

२.३.१ कहानी

२.३.२ अकाल दंड

२.३.३ केशर कस्तूरी

२.३.४ कसाईबाडा

२.३.५ ख्वाजा ओ मेरे पीर

२.३.६ तिरिया चरित्तर

२.३.७ बनाना रिपब्लिक

२.३.८ भरतनाट्यम

२.३.९ सिरी उपमा जोग

२.४ उपन्यास

२.४.१ त्रिशूल

२.४.२ तर्पण

२.४.३ आखरी छलाँग

तृतीय अध्याय

शिवमूर्ति के उपन्यास साहित्य में संवेदना के विभिन्न रूप

हिंदी के महानतम उपन्यासकारों मे शिवमूर्ति का स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज जीवन का वास्तव चित्रण कर समाज की तमाम विसंगतियों की अभिव्यक्ति कर रूढियों, परंपराओं पर प्रहार कर तीखा व्यंग्य कसकर समाज के दोहरे स्वभाव को पाठकों के सामने बडी मौलिकता से रखा है।

केवल समाज की विसंगतियों को ही नहीं जातिगत व्यवस्थाओं के प्रति विद्रोह और धार्मिक कट्टरता के कारण समाप्त होती मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करते हुए अन्याय, अत्याचार, नारी जीवन, शिक्षा व्यवस्था ग्रामीण जीवन, किसानों की दुरावस्था आदियों पर शिवमूर्ति प्रखरता से आवाज उठाए दिखाई देते हैं।

शोधकार्य की दृष्टि से प्रस्तुत अध्याय में शिवमूति के उपन्यासों का अध्ययन होगा कथावस्तु और पात्र तत्वों को वैसे ही रखकर कथा के आरंभ से लेकर अंत तक की मानव जीवन की संवेदनाओं को विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया जाएगा।

३. उपन्यास

३.१. त्रिशूल

३.१.१ धार्मिक संवेदना

३.१.२ राजनैतिक संवेदना

३.१.३ आर्थिक संवेदना

३.१.४ सामाजिक संवेदना

३.१.५ शोषण की संवेदना

३.२ तर्पण

३.२.१ दलित संवेदना

३.२.२ नारी संवेदना

३.२.३ ग्राम संवेदना

३.२.४ सामाजिक संवेदना

३.३ आखिरी छलाँग

३.३.१ किसानों की संवेदना

३.३.२ सामाजिक संवेदना

३.३.३ आर्थिक संवेदना

३.३.४ राजनैतिक संवेदना

चतुर्थ अध्याय

शिवमूर्ति की कहानियों मे संवेदना के विविध रूप।

हिंदी साहित्य के तमाम प्रसिध्द साहित्यकारों में शिवमूर्ति अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। जिन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज जीवन का चित्रण अभिव्यक्त करते हुए मध्यवर्ग, निम्नवर्ग के समाज परिवार का यथार्थ चित्रण कर जीवन की विसंगतियों को पाठकों के सामने बडी सशक्तता के साथ रखने का प्रयास किया है। न केवल समाज जीवन का चित्रण ही नहीं व्यक्ति जीवन की विभिन्न संवेदनाओं के पहलुओं को सजीव रूप में चित्रित करते हैं। जिनमें उन्होंने कहीं कहीं खुद के एवं डी.एम. के माध्यम से सुशिक्षित बेकारी का चित्रण किया है तो मौकापरस्त के उदाहरण पर कामयाबी की वजह से कहीं पति दूसरा विवाह रचाता है तो कहीं पत्नी गैर मर्द के साथ संबंध स्थापित करती है। कहीं दलित एवं पिछडी जाति एवं उनके अधिकारों की बात उठायी जाती है, तो कहीं नारी अधिकार पर प्रश्न उठाये जाते है। राजनीति के चुनाव में किस प्रकार पैसा, शराब, मांसाहार की मांग होती है और पूरे गांवभर सभी जाति के मतदाताओं के पांव पडने पडते हैं, ऐसे विविध प्रश्नों पर लेखक ने प्रकाश डाला है।

४.१ अकाल दंड

४.१.१ बेरोजगारी की संवेदना

४.१.२ भूखमरी की संवेदना

४.१.३ नारी शोषण की संवेदना

४.१.४ अत्याचार की संवेदना

४.१.५.बुढापे की संवेदना

४.२ केशर कस्तूरी

४.१.१ लडकी की संवेदना

४.२.२.शैक्षिक संवेदना

४.२.३ जातिय संवेदना

४.२.४ युवकों की मानसिक संवेदना

४.२.५ स्वभावगत संवेदना

४.२.६ चारित्रिक संवेदना

४.२.७ ग्राम संवेदना

४.२.८ दुः खमय संवेदना

४.३ कसाईबाडा

४.३.१ राजनैतिक संवेदना

४.३.२ नारी संवेदना

४.३.३ मौकापरस्ती की संवेदना

४.३.४ व्यक्ति मन की संवेदना

४.४ ख्वाजा, ओ मेरे पीर

४.४.१ लुटपाट की संवेदना

४.४.२ मानव की संवेदना

४.४.३ पारिवारिक संवेदना

४.४.४ आर्थिक संवेदना

४.५ तिरिया चरित्तर

४.५.१ आर्थिक संवेदना

४.५.२ पारिवारिक संवेदना

४.५.३ वासनात्मक संवेदना

४.५.४ नारी संवेदना

४.६ बनाना रिपब्लिक

४.६.१ राजनैतिक संवेदना

४.६.२ आर्थिक संवेदना

४.६.३ धार्मिक संवेदना

४.६.४ सामाजिक संवेदना

४.७ भरतनाट्यम

४.७.१ पारीवारिक संवेदना

४.७.२ आर्थिक संवेदना

४.७.३ शैक्षिक संवेदना

४.७.४ सामाजिक संवेदना

४.८ सिरी उपमा जोग

४.८.१ ग्राम संवेदना

४.८.२ बेकारी की संवेदना

४.८.३ रिश्तों की संवेदना

४.८.४ अत्याचार संबंधी संवेदना

४.८.५ अनैतिकता के आधारपर निर्माण होनेवाली संवेदना

पंचम अध्याय

शिवमूर्ति के उपन्यास तथा कहानियों का शिल्प की दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया जाएगा।

५.१ भाषागत अध्ययन

५.१.२ भाषा की परिभाषा अर्थ स्वरूप

५.१.३ शिल्प की परिभाषा अर्थ स्वरूप

५.१.४ लोकभाषा

५.१.५ पात्रानुकूल भाषा

५.१.६ काव्यात्मक भाषा

५.१.७ ध्वन्यात्मक भाषा

५.१.८ चित्रात्मक भाषा

५.२ शैलीगत अध्ययन

५.२.१ वर्णनात्मक शैली

५.२.२ पूर्वदीप्त शैली

५.२.३ वार्तालाप या संवाद शैली

५.२.४ पत्रात्मक शैली

५.२.५ चित्रात्मक शैली

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

प्रस्तुत अध्याय में प्रसिद्ध ग्रामीण साहित्यकार शिवमूर्ति जी के कथा-साहित्य में व्यक्त संवेदनाओं के आधार पर निष्कर्ष एवं मूल्यांकन किया जाएगा।

परिशिष्ट

१) संदर्भ ग्रंथ

२) कोश ग्रंथ

३) पत्र-पत्रिकाएँ

ग्रंथ सूची

१) शिवमूर्ति के सभी उपन्यास

१) त्रिशूल

२) तर्पण

३) आखरी छलाँग

२) शिवमूर्ति की सभी कहानियाँ

१) अकाल दंड

२)	केशर कस्तूरी
३)	कसाईबाडा
४)	ख्वाजा ओ मेरे पीर
५)	तिरिया चरित्तर
६)	बनाना रिपब्लिक
७)	भरतनाट्यम
८)	सिरी उपमा जोग

शोध-निर्देशक	**शोधार्थी**
प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी , शोध-निर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय, लातुर जि. लातुर	**विक्रम अशोक पांडे (एम. ए. बी. एड्., नेट)**